INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान REVENUE OFFICER

ग्रेड-2nd

& EXECUTIVE OFFICER ग्रेड- IVth

(R.P.S.C.)

HANDWRITTEN NOTES

भाग -1 राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

REVENUE OFFICER
(– 2ND)
GRADE &
EXECUTIVE OFFICER
(GRADE - IVTH)

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RPSC Executive Officer / Revenue Officer**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"RPSC Executive Officer / Revenue Officer"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/x3seet

Online order करें - https://bit.ly/eo-ro-notes

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम (2022)**

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल 1
   - पुरा पाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक
2. ऐतिहासिक राजस्थान 13
   - महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र
3. प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां 21
   - गुर्जर प्रतिहार वंश
   - मेवाड़ का इतिहास
   - गुहिल वंश
   - चौहान वंश
   - परमार वंश
   - राठौड़ वंश
   - सिसोदिया वंश
   - कछवाहा राजवंश
4. मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था 94
5. राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार 97
6. आधुनिक राजस्थान 113
   - राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां
   - राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह
   - राजस्थान में प्रचलित विभिन्न सामाजिक कुरुतियाँ
7. राजस्थान राजनीतिक संगठन व समाचार पत्र 128
8. राजस्थान में राजनीतिक जागरण 132

9. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन 139
10. विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन 152
11. राजस्थान का एकीकरण 168

संस्कृति

1. राजस्थान की वास्तु परम्परा 174
- मंदिर
- किले एवं महल
- राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ

2. चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प 218
3. प्रदर्शन कला 242
- शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य
- लोक संगीत एवं वाद्य
- लोक नृत्य एवं नाट्य

4. भाषा एवं साहित्य 287
5. धार्मिक जीवन 304
- प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय
- राजस्थान के लोक देवी - देवता

6. राजस्थान में सामाजिक जीवन 329
- मेले एवं त्यौहार
- सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ
- वेशभूषा एवं आभूषण

7. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 348

अध्याय – I

राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल

• पाषाणकालीन सभ्यता

I. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लधु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृदभाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृदभाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृदभाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।

- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृदभाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी**। इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ -

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की

25. कोटड़ा (झालावाड़):

- इस स्थल का उत्खनन वर्ष 2003 में दीपक शोध संस्थान द्वारा किया गया ।
- यहाँ से 7वीं से 12वीं शताब्दी मध्य के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।

क्र.स.	संस्कृति काल	स्थल
1.	पुरा पाषाण काल	डीडवाना एवं जायल (नागौर), भानगढ़ (अलवर), विराटनगर (जयपुर), दर (भरतपुर), **इन्द्रगढ़ (कोटा)**
2.	मध्य पाषाण काल	**बागौर (भीलवाड़ा),** विराटनगर (जयपुर), तिलवाड़ा (बाड़मेर)
3.	नव पाषाण काल	आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), **गिलूण्ड** (राजसमंद), झर (जयपुर)
4.	ताम्र पाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बाड़मेर), **बालाथल (उदयपुर)**
5.	ताम्रयुगीन	**गणेश्वर (सीकर),** साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ापुष्कर (अजमेर), **बेणेश्वर (डूंगरपुर),** नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (जयपुर), कुराड़ा (परबतसर), पलाना (जालौर), मलाह (भरतपुर), कोलमाहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	लौह युगीन	**नोह (भरतपुर), सुनारी (झुंझुनू),** विराटनगर, जोधपुरा, सांभर (जयपुर), रैढ़, नगर, नैणवा, भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला (गंगानगर), ईसवाल (उदयपुर)

अभ्यास प्रश्न

1. "ए सर्वे वर्क ऑफ एनशिएन्ट साइट्स अलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर" किसका कार्य था?

(a) एम. आर. मुगल (b) ओरैल स्टैन
(c) हरमन गोइट्ज (d) वी. एन. मिश्रा
उत्तर :- b

2. प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे बसी राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता कौनसी है?

(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) गणेश्वर
उत्तर :- a

3. निम्नांकित में से किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिंधु घाटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?

(a) जी. एच. ओझा (b) श्यामल दास
(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी
उत्तर :- c

4. राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहते हैं?

(a) नागौर (b) गिलूण्ड
(c) आहड़ (d) गणेश्वर
उत्तर :- d

5. प्राचीन भारत के टाटानगर के नाम से विख्यात सभ्यता है?

(a) तिलवाड़ा (b) नलियासर
(c) जोधपुरा (d) रैढ़
उत्तर :- d

6. मालव सिक्के व आहत मुद्राएँ किस सभ्यता के अवशेष हैं?

(a) जोधपुरा (b) रैढ़
(a) नगर (मालव नगर) (d) नलियासर
उत्तर :- c

7. कान्तली नदी के किनारे स्थित गणेश्वर की सभ्यता का उत्खनन किसके नेतृत्व में हुआ?

(a) आर.सी. अग्रवाल व एच.एम. साँकलिया

यशपाल :-

- प्रतिहार वंश का **अंतिम शासक यशपाल (1036 ई.)** था ।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

• मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ का गुहिल वंश - मेवाड़ रियासत राजस्थान की **सबसे प्राचीन** रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है। मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना **एकलिंगजी (शिव) का उपासक** था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को **स्वयं के राजा / ईष्टदेव** तथा **स्वयं को** एकलिंगनाथजी का **दीवान** मानते हैं। गुहिल वंश की कुल **देवी बाण** माता है। मेवाड़ रियासत के सामन्त **'उमराव कहलाते** थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे **'आसकाँ'** कहते थे। मेवाड़ के महाराणा **'हिन्दुआ का सूरज'** कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है, तथा इसमें उदयपुर का **राजवाक्य** "जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहि राखै करतार" अंकित है। ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के संकेत देते हैं । मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर **'इजलास खास'** कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं। **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** ने इन्हें **विशुद्ध सूर्यवंशीय** क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में **गुहिल नाम** के एक प्रतापी राजा ने की थी। भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था । लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासकों का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- **विजयभूप** ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा । विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में **शिलादित्य** नामक व्यक्ति **वल्लभीनगर** का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय **परमार वंश** का शासन था, जिनकी राजधानी **चंद्रावती** थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास **अबुर्दा देवी मंदिर** चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ौसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । **पुष्पावती** ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित **वीरनगर** नामक स्थान पर पहुंची। यहाँ वह **कमलाबाई** नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम **गुहिल** रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।
- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर

पहुँचा। लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था। अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था। गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें। गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे, और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। **566** ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

<u>बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)</u>

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। **बप्पा रावल का जन्म** मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 19 वर्ष **713 ई.** में **ईडर** में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को **सिसोदिया** भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् **723** के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।
- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारित ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई। **सन् 712 ई.** में मुहम्मद कासिम से सिंध को जीता।
- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी। बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी। 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया **बप्पा रावल ने सिंध** के **मुहम्मद बिन कासिम** को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासरंक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवतः जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।
- उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया। बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।
- **बप्पा रावल के सिक्के** : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 115 ग्रेन (**65 रत्ती**) है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है, **बाई ओर**

- रावल लूणकरण के समय जैसलमेर मे अर्द्ध साका हुआ ।

6. हरराज / हरराय भाटी

- हरराज भाटी ने जयपुर के राजा भारमल के कहने पर 1570 ई. मे हुए नागौर दरबार में उपस्थित होकर अकबर की अधीनता स्वीकार कर अपनी पुत्री **नाथी बाई** का विवाह अकबर के साथ कर दिया ।
- हरराज भाटी भाटियों में प्रथम व्यक्ति था जिसने मुगलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए ।

7. रावल भीमसिंह भाटी

- रावल हरराज के बाद उसका पुत्र रावल भीम जैसलमेर का शासक बना ।
- भीमसिंह ने अपनी पुत्री का विवाह सलीम **(जहाँगीर)** से किया । जहाँगीर बादशाह बना तो उसने इस बेगम का नाम 'मलिका-ए-जहाँ' रखा ।
- तुजुक-ए जहाँगीरी में रावल भीम का उल्लेख मिलता है । इन्होंने मुगलों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किये ।

8. महारावल मूलराज द्वितीय

- मूलराज द्वितीय ने अपने दिवान सालमसिंह के अत्याचारों से परेशान होकर 1818 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि कर अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त कर लिया ।
- इनके काल में 'मूलनिवास' तथा लक्ष्मी कीर्ति संवाद आदि ग्रंथों की रचना की गई है ।

9. महारावल जवाहर सिंह भाटी

- जवाहर सिंह जैसलमेर का अंतिम शासक था। जिसने शासन काल में स्वतन्त्रता सेनानी सागरमल गोपा को 3 अप्रैल, 1946 ई. को तेल झिड़क कर जेल में जिंदा जला दिया गया था ।
- इनके समय में 1939 में राज्य में प्रथम बिजली घर की स्थापना हुई ।
- वर्ष 1933 में जैसलमेर में जवाहर प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना हुई ।

करौली रियासत

- करौली रियासत का कुछ भाग मत्स्य जनपद में तथा कुछ भाग सूरसैन जनपद में आता था ।

1. विजयपाल

- करौली के यादव शाखा का मूल पुरुष/आदि पुरुष/संस्थापक विजयपाल ही था जिसने 1040 ई. में अपने राज्य की राजधानी मथुरा से हटाकर बयाना (विजय मंदिर गढ़) को बनाया ।

2. तिमनपाल

- तिमनपाल ने **तिमनगढ़ दुर्ग** बनवाकर उसे अपनी नई राजधानी बनाई ।

3. अर्जुनपाल

- 1327 ई. में अर्जुनपाल ने तिमनगढ़ दुर्ग को मुस्लिमों से छीनकर यहाँ पर पुनः यादवों का शासन स्थापित किया ।
- अर्जुनपाल ने 1348 ई. में लीसिल नदी के तट पर कल्याणपुर कस्बा बसाया ।
- कल्याणपुर कस्बा वर्त्तमान में करौली के नाम से जाना जाता है ।
- अर्जुनपाल ने ही यहाँ हनुमानजी की माता (अंजनी माता का मंदिर) बनवाया ।

4. हरवक्षपल

- **हरवक्षपाल** ने 15 नवम्बर 1817 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संधि कर अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली ।
- करौली राजस्थान की पहली रियासत थी जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ संधि की ।

मारवाड़ वंश

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं। मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिदमल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्राहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली

की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।

- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (जाकोड़ा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया ।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली।

राजस्थान भी क्रांतिकारी आंदोलनों से अछूता नहीं रह सका। उत्तर भारत के अनेक क्रांतिकारी, राजस्थान के क्रांतिकारियों से संपर्क बनाये हुए थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा (1857-1930 ई.) उच्च कोटि के विद्वान थे। उन्होंने 1885-97 ई. के मध्य रतलाम, उदयपुर और जूनागढ राज्यों में दीवान के पद पर कार्य किया था।

स्वामी दयानंद सरस्वती के संपर्क में आने के बाद वे स्वदेशी वस्तुओं व वस्त्रों के पक्के समर्थक बन गये। 1897 ई. में महाराष्ट्र के पूना नगर में प्लेग कमिश्नर रैण्ड व उसके सहायक आयर्स्ट की हत्या कर दी गयी।

ब्रिटिश सरकार को श्यामजी कृष्ण वर्मा पर संदेह हुआ। अतः श्यामजी कृष्ण वर्मा किसी तरह जान बचाकर इंगलैण्ड चले गये जहाँ उन्होंने इंडिया हाउस की स्थापना की। इंडिया हाउस भारतीय क्रांतिकारियों का गढ बन गया और वहाँ से भारत में क्रांतिकारियों को हरसंभव सहायता दी जाती रही।

श्यामजी कृष्ण वर्मा राजस्थान के क्रांतिकारियों के प्रेरणा-स्रोत रहे। राजस्थान में क्रांतिकारियों का नेतृत्व अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, खरवा के राव गोपालसिंह आदि ने किया।

अभ्यास प्रश्न

1. एकी आंदोलन किसके द्वारा प्रारंभ किया गया-
(a) मोतीलाल तेजावत
(b) विजय सिंह पथिक
(c) रामनारायण चौधरी
(d) माणिक्य लाल वर्मा
उत्तर :- a

2. बिजौलिया के कृषक आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया ?
(a) हरिभाऊ उपाध्याय
(b) विजयसिंह पथिक
(c) जमनालाल बजाज
(d) मणिक्यलाल भूपसिंह वर्मा
उत्तर :- b

3. कटराथल गाँव की 10,000 जाट महिलाओं ने 1934 में किसान आंदोलन में भाग लिया इस का नेतृत्व किसने किया था?
(a) किशोरी देवी
(b) अंजना देवी चौधरी
(c) दुर्गावती देवी शर्मा
(d) खेतु बाई
उत्तर :- a

4. निम्नलिखित में से कौन सा आंदोलन भीलो के उत्कर्ष संबंधित नहीं हैं-
(a) राजस्थान सेवा संघ
(b) भगत आंदोलन
(c) एकी आंदोलन
(d) बनवासी संघ

उत्तर :- a

5. गलत युग्म की पहचान कीजिये-
(a) बिजोलिया आंदोलन- माणिक्य लाल वर्मा
(b) राजस्थान सेवा संघ- हरीभाई किंकर
(c) सिरोही प्रजामंडल -देशराज
(d) मारवाड़ किसान आंदोलन- राधाकृष्ण तात

उत्तर :- C

6. बरड किसान आंदोलन को संगठित करने वाला राजस्थान सेवा संघ हाडौती की शाखा का नेता कौन था?
(a) रामनारायण चौधरी
(b) विजय सिंह पथिक
(c) स्वामी गोपाल दास
(d) नयनूराम शर्मा

उत्तर :- d

7. सही सुमेलित नहीं हैं-
(a) काँगड़ कांड- अलवर
(b) डाबड़ा कांड -नागौर
(c) तमिसो कांड- धौलपुर
(d) पूनावाडा कांड- डूंगरपुर
उत्तर :- a

8. 1890 के दौर में बिजौलिया के जागीरदार कौन थे –
(a) चौहान (b) परमार
(c) राणावत (d) शक्तावत
उत्तर :- b

9. राजस्थान मध्य भारत सभा की स्थापना अजमेर में किस वर्ष हुई थी

(a) 1923 (b) 1922
(c) 1920 (d)1929

उत्तर :- c

10. सूअरो की समस्या के निराकरण हेतु प्रारम्भ किया गया आन्दोलन कौनसा था ?

(a) मेव किसान आन्दोलन
(b) बूँदी किसान आन्दोलन
(c) अलवर किसान आन्दोलन
(d) जाट किसान आन्दोलन

उत्तर :- c

अध्याय – 9

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 55 साल तक चला।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 55 वर्षों तक) –

जिला भीलवाड़ा
बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।
संस्थापक अशोक परमार
बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।
कारण
1. लगान की दरें अधिक थीं ।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।
बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।
बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।
बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।
1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास

2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रूपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया । बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे ।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया ।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है ।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था ।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था ।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरूद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेन खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

राजस्थान का कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

अध्याय- I
राजस्थान की वास्तु परम्परा

- **मंदिर**

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता हैं।
राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(1.) नागर या आर्य शैली-

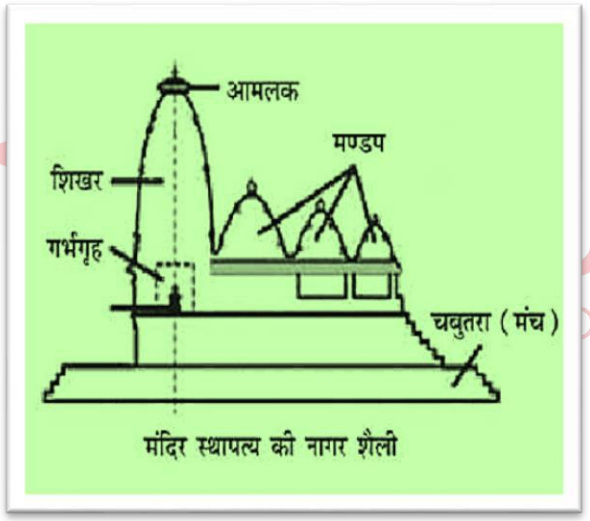

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता हैं।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता हैं।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता हैं।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ हैं, निम्न हैं- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओंसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2.) भूमिज शैली

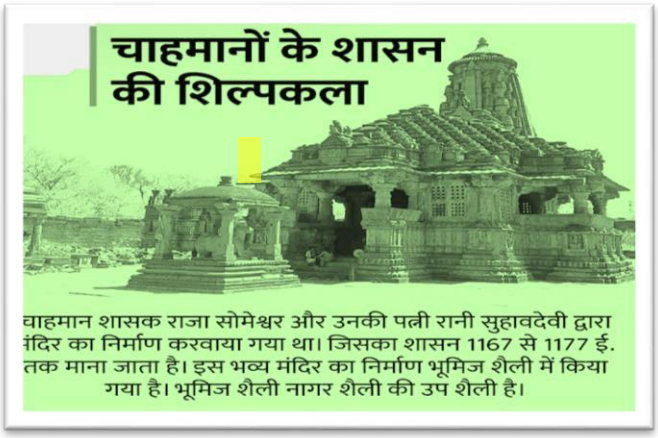

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती हैं।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता हैं।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर हैं।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ हैं, निम्न हैं- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

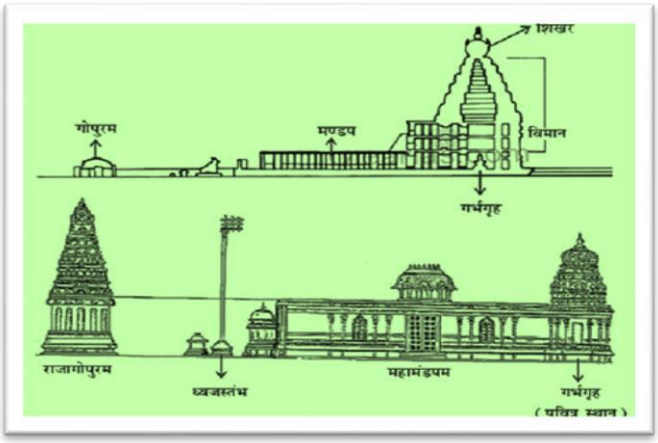

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता हैं।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता हैं।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर हैं।

- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते है तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (जयपुर)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया,जोधपुर)

I. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए [RAS. 2016]
(1)आहड़ का आदिवराह मंदिर (2)आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर (4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
कूट :
(a)1 , 2 , 3 और 4 (b)1 , 2 और 4
(c) 1 और 4 **(d)2 और 4**

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

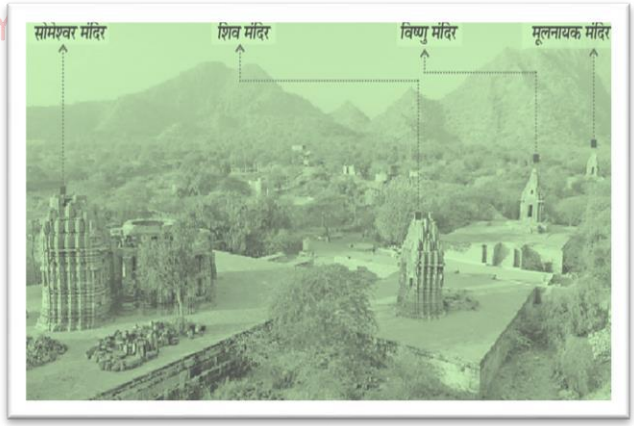

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।

❖ त्रिनेत्र गणेश मन्दिर (रणथम्भौर, सवाईमाधोपुर)

- यह मन्दिर रणथम्भौर दुर्ग में स्थित है जहाँ शादी का प्रथम कार्ड भेजा जाता है।
- भाद्रशुक्ल चतुर्थी को यहाँ विशाल मेला भरता है।
- 'गजवंदनम चितयम' नामक ग्रंथ में विनायक के तीसरे नेत्र का वर्णन किया गया है।
- मान्यता है कि भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र उत्तराधिकारी के रूप में गणपति को सौंप दिया था और इस तरह महादेव की समस्त शक्तियां गजानन में निहित हो गई और वे त्रिनेत्र बने।
- इस मन्दिर में गणेशजी के मुख की पूजा होती है जिस पर सिंदूर लगाया जाता है।
- गणेश मंदिर के पीछे प्राचीन शिव मंदिर बना है जिसके सामने हम्मीर देव चौहान ने अपना सिर काटकर चढ़ाया था।

❖ उषा मन्दिर (बयाना, भरतपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण बाणासुर ने करवाया था।
- पौराणिक ग्रंथों के अनुसार बाणासुर ने ही बयाना (प्राचीन नाम शोणितपुर था) नामक नगर की स्थापना की थी।
- इस मन्दिर का पुनः निर्माण फक्का वंश के राजा लक्ष्मण सेन गुर्जर की रानी चित्रलेखा व पुत्री मंगलाराज ने 936 ई. में करवाया।
- इस मन्दिर को इल्तुतमिश के शासन काल में मस्जिद बना दिया गया।

❖ लक्ष्मण मन्दिर (भरतपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण लगभग 300 साल पहले महाराजा बलदेव सिंह के पुत्र बलवंत सिंह ने करवाया था लेकिन इसकी नींव महाराजा बलदेव सिंह ने रखी थी।
- इस मंदिर में लक्ष्मण जी के साथ उनकी पत्नी उर्मिला, भाई श्री राम,भरत,शत्रुधन एवं हनुमान जी की मूर्तियाँ भी हैं।
- यह भारत का एकमात्र लक्ष्मण मंदिर है।
- भगवान लक्ष्मण भरतपुर महाराजाओं के ईष्ट देव हैं।

❖ ८४ खम्भों की मस्जिद (कामां, भरतपुर)

- यहाँ पहले शिव व विष्णु का मन्दिर था।
- विदेशी आक्रमणों के समय इसे तोड़कर मस्जिद बना दी गयी।

NOTE- भरतपुर में स्थित गंगा मन्दिर भी ८४ खम्भों पर बना है।
NOTE- ८४ खम्भों की छतरी बूंदी में स्थित है। इसका निर्माण 1683 ई. में राव राजा अनिरुद्ध सिंह हाड़ा ने अपनी धाय माँ के पुत्र देवा की स्मृति में करवाया था।

❖ कपालेश्वर महादेव मंदिर (बाड़मेर)

- यह मंदिर बाड़मेर में स्थित है।
- किंवदन्तियों के अनुसार माना जाता है कि पाण्डवों ने अपने अज्ञात वास का अंतिम समय यहाँ बिताया था।
- इस मंदिर के पास बिशन पगलिया नामक पवित्र स्थान स्थित है जहाँ भगवान विष्णु के चरण चिह्न पूजे जाते है।

❖ नीलकंठ महादेव मंदिर (टहला,राजगढ़)

- इस मन्दिर का निर्माण 953 ई. में अजयपाल बड़गुर्जर ने करवाया।
- इस मंदिर में नृत्य करते गणेश जी (नाचना गणेश) की मूर्ति है।

❖ भांडेश्वर जैन मंदिर(बीकानेर)

- इस मन्दिर का निर्माण 1411 ई. में राव लूणकरण के समय ओसवाल महाजन भांडाशाह ने करवाया।
- कहा जाता है की इस मंदिर की नींव में पानी की जगह घी काम में लिया गया था।
- यह मन्दिर 5वें तीर्थंकर सुमितनाथ जी को समर्पित है।
- यह मंदिर तीन मंजिला है जिसकी प्रथम मंजिल पर भगवान सुमतिनाथ की मूर्ति, दूसरी मंजिल पर

- नागौर विजय के उपलक्ष में इसका निर्माण 1458-58 ई. राणा कुम्भा ने अपनी प्रिय रानी कुम्भलदेवी के सम्मान में करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी, कुम्भलमेरु, मेवाड़ का मेरुदण्ड, मेवाड़ की संकटकालीन आश्रयस्थली, मेवाड़ की आँख भी कहते हैं ।
- अत्यधिक ऊँचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- इस दुर्ग के चारों ओर दीवार है जिसकी लम्बाई लगभग 36 किलोमीटर तथा चौड़ाई 7 मीटर है। जिस कारण से इसे भारत की महान दीवार कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसे एट्रुस्कन की संज्ञा दी।
- पन्नाधाय ने उदयसिंह को कुम्भलगढ़ में आशादेव पुरा की सुरक्षा में भेजा।
- इस दुर्ग में राणा उदय सिंह का राज तिलक तथा महाराणा प्रताप का जन्म बादल महल के जूनीकचरी में हुआ।
- इस दुर्ग में एक लघु दुर्ग है जिसे कटारगढ़ के नाम से जानते है जिसमें बादल महल स्थित है जो कुम्भा का निवास स्थान था।
- कटारगढ़ में स्थित मामादेव मन्दिर के पास मामा देव कुण्ड में राणाकुम्भा की उसके पुत्र ऊदा ने हत्या कर दी।
- इस दुर्ग को केवल एक बार 1578 ई. में शाहबाज खां (अकबर का सेनापति) ने 3 बार आक्रमण कर इस दुर्ग को विजित किया।
- इस दुर्ग में 9 द्वार हैं जिसमें हल्ला पोल प्रथम प्रवेश द्वार है।
- इस दुर्ग में उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है (12 खम्भों की) इसका वास्तुकार घषनपना है।
- इस दुर्ग में तिलखाना स्थित है जो हाथियों का बाड़ा था।
- दुर्ग में स्थित झाली रानी के महल को झाली रानी का मालिया कहते हैं।
- इस दुर्ग में 1460 ई. में कुम्भलगढ़ प्रशस्ति मामादेव मन्दिर में काली शिलाओं पर संस्कृत भाषा में लिखी गयी है। इस प्रशस्ति की रचना कान्हा व्यास ने की थी।

❖ रणथम्भौर दुर्ग

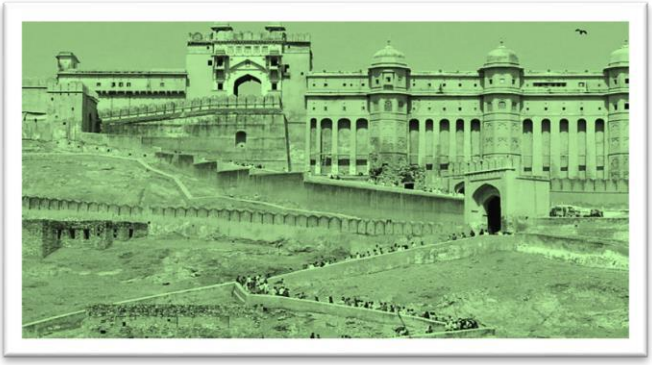

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- इसका निर्माण 887 ई. में रणधामदेव चौहान ने करवाया। यह दुर्ग अण्डाकार आकृति में निर्मित है।
- यह रण व थंभन पहाड़ी पर स्थित होने के कारण रणथम्भौर कहलाया।
- इस दुर्ग में छह प्रवेश द्वार हैं मुख्य प्रवेश द्वार नौ लखा दरवाजा कहलाता है।
- इसे चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई व दुर्गाधिराज भी कहते हैं।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा बाकी सभी दुर्ग नंगे हैं यह बख्तरबंद है।
- इस दुर्ग पर दिल्ली सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने 1292 ई. में आक्रमण किया जब सफलता नहीं मिली तब उसने कहा कि ऐसे 10 दुर्गों को मैं मुसलमान के बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- अलाउद्दीन खिलजी ने वर्ष 1299 ई. में असफल आक्रमण किया।
- 10 जुलाई, 1301 ई. में इस दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हुआ। इस आक्रमण में हम्मीर देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया व उसकी रानी रंगदेवी के नेतृत्व में पदमसर तालाब में जल जौहर हुआ।
- इस प्रकार यहाँ राजस्थान का प्रथम साका हुआ। इस विजय पर अमीर खुसरो का कथन " आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर बन गया
- इस दुर्ग में हम्मीर महल, सुपारी महल , जौंरा - भौंरा (अनाज रखने के गोदाम) , हम्मीर कचहरी , रानी कर्मावती की अधूरी छतरी(अधूरे सपनों के महल) जोगी महल , पीर सदरुद्दीन की दरगाह , रानीहाड़ तालाब , लक्ष्मीनारायण मंदिर , गुप्त गंगा स्थित है।
- दुर्ग में स्थित शिव मंदिर में हम्मीर ने अपना सिर चढ़ाया था।

- हम्मीर देव चौहान ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्ष के शासन काल की याद में 32 खम्भों की छतरी का निर्माण करवाया जिसे न्याय की छतरी कहते हैं।
- पद्मा तालाब , रणिहाल तालाब , रणत्या डूंगरी आदि स्थित हैं।
- इस दुर्ग में अर्रादा (एक उपकरण था जिससे दुश्मनों पर पत्थर फैंके जाते थे) व मगरनी (दुश्मनों पर ज्वलनशील पदार्थ फैंका जाता था) स्थित हैं।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध हैं।
- इस किले में रणत भंवर (त्रिनेत्रगणेश जी का मंदिर शादी की पहली पत्रिका यहाँ भेजी जाती हैं)

❖ मेहरानगढ़ दुर्ग

- इस दुर्ग की नींव 12 मई, 1459 ई. को रिद्धि बाई (करणी माता) ने रखी थी।
- राजाराम कड़ेला व मेहरसिंह को इस दुर्ग की नींव में जिंदा दफनाया गया था।
- इसका निर्माण राव जोधा ने करवाया था।
- यह दुर्ग पचेटिया / चिड़िया टूक पहाड़ी पर स्थित हैं।
- इसे मयूरध्वजगढ़ , कागमुखी, गढ़ चिंतामणी, सूर्यगढ़ कहते हैं।
- इस दुर्ग के अधिकांश महलों का निर्माण अभयसिंह ने करवाया था।
- जैकेलिन कनेडी ने इसे विश्व का 8वाँ आश्चर्य कहा।
- रुडयार्ड किपलिंग ने इसका निर्माण परियों व फरिश्तों द्वारा करवाया बताया हैं।
- टॉड ने कहा इस दुर्ग से पूरे राज्य पर नजर रखी जा सकती हैं।
- मालदेव ने किले में लोहा पोळ का निर्माण करवाया था।
- अजीतसिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोल का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में जयपोळ का निर्माण करवाया (इस पोळ के दरवाजे को निमाज का ठाकुर 'अमरसिंह उदावत' अहमदाबाद से लाया था)।
- इस दुर्ग के लोहापोल दरवाजे पर धन्ना और भींवा (मामा भांजा) की 10 खम्भों की छतरी स्थित हैं। तथा जयपोल दरवाजे पर किलेदार कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी बनी हैं। जसोल गाँव के कीरत सिंह सोढा, गिंगोली युद्ध के बाद जोधपुर घेरे में मानसिंह की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया।
- इस दुर्ग में शम्बुबाण, गजनी खां, किलकिला, जमजमा, कड़क बिजली, नुसरत, गुब्बार, धुडधणी नामक तोपे स्थित हैं।
- इस दुर्ग की तलहटी में जसवंत थड़ा हैं जिसे राजस्थान का ताजमहल कहते हैं। इसका निर्माण सरदारसिंह ने अपने पिता जसवंत सिंह द्वितीय की याद में करवाया।
- इस दुर्ग में झरनेश्वर महादेव, ज्वाला माता , मुरली मनोहरजी , आनन्दधन चामुण्डा माता , नागणेची माता का मन्दिर स्थित हैं।
- यहाँ जहूर खां व भूरे खां की मजार हैं।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मोती महल, फूल महल, चौखेलाव महल प्रमुख महल हैं।
- दुर्ग में शृंगार चौकी हैं जहाँ राठौड़ों का राजतिलक होता था। शृंगार चौकी का निर्माण तख्त सिंह ने करवाया था।
- जोधा की 'रानी जसमा दे हाड़ी ने 'रानीसर तालाब' बनवाया, इससे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- इस दुर्ग को 2005 ई. में यूनेस्को अवॉर्ड दिया गया था।

❖ जैसलमेर दुर्ग

5. मुस्लिम दाउदी बोहरा सम्प्रदाय का राजस्थान में सर्वाधिक पवित्र स्थान गलियाकोट किस जिले में स्थित है ?

A. बाँसवाड़ा
B. गंगानगर
C. सवाई माधोपुर
D. डूंगरपुर **(D)**

6. ' सनकादि सम्प्रदाय ' किस सम्प्रदाय का दूसरा नाम है ?

A. लालदासी का
B. निम्बार्क का
C. वल्लभाचार्य का
D. रामानुजाचार्य का **(B)**

7. ' बाणी ' व ' सर्वंगी ' नामक ग्रंथों के रचयिता हैं—

A. बखना जी
B. दुर्लभ जी
C. रज्जब जी
D. दुर्जन जी **(C)**

8. रसिक सम्प्रदाय के प्रवर्तक ' अग्रदास जी महाराज ' कहाँ के निवासी थे ?

A. जयपुर के
B. जोधपुर के
C. अजमेर के
D. नागौर के **(A)**

9. महात्मा चरणदासजी की शिष्या जिन्होंने ' दयाबोध ' और ' विनयमालिका ' नामक ग्रंथों की रचना की

A. करमाबाई
B. दयाबाई
C. जोधाबाई
D. माँगीबाई **(B)**

10. राजस्थान में ' निरंजनी सम्प्रदाय ' के प्रवर्तक कौन थे ?

A. रामदासजी
B. लालदासजी
C. गरीबदासजी
D. हरिदासजी **(D)**

• राजस्थान के लोक देवी - देवता

❖ लोक देवियाँ

राजस्थान की लोक देवी नहीं है ?(2012)	
(a) हिडिम्बा माता	(b) आवरी माता
(c) करणी माता	(d) छींक माता

➢ करणी माता

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी है।
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात है।
- जन्म सुआप गाँव (जोधपुर) के चारण परिवार में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम रिद्धु बाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता है।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।
- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता है।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्हा ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ा माता' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं ।

- सफेदचील को करणी माता का रूप माना जाता है।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चैत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है ।
- देशनोक बीकानेर में करणी माता के मंदिर की नींव स्वयं करणी माता ने रखी थी।
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित है, जिनके नाम - **"सावन-भादो कड़ाइयाँ"** हैं।

चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती है। जो दो प्रकार की होती है।

1. सिधाऊ - शांति/सुख के समय उपासना

2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना

➢ जीण माता

- चौहान वंश की आराध्य देवी ।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढाई प्याला मदिरा पान करती है ।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती है ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है ।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।

राजस्थान के लोक साहित्य में किस देवी - देवता का गीत सबसे लम्बा है ? (2010)

(a) जीणमाता (b) गोगाजी

(c) आईमाता (d) मल्लीनाथ जी

➢ कैला देवी

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी ।
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।

➢ शिला देवी

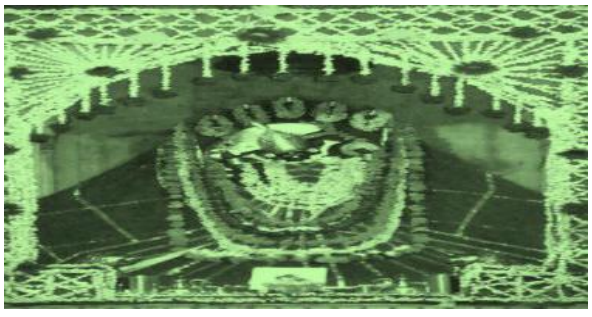

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी।
- इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है ।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर 'जस्सोर' नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति ।6वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।

- भोपों की कुलदेवी।
- यहाँ में ले में नारियल की जोत जलाई जाती है तथा बकरे की बलि दी जाती है।

➢ **राठासण देवी**:- मेवाड़ में
➢ **सुराणा देवी**:- गोरखाण (नागौर) में।
➢ **छीक माता**:- जयपुर
➢ **द्रष्टा माता**:- कोटा कोटा राजपरिवार की कुलदेवी।
➢ **गायत्री माता**:- पुष्कर (अजमेर)
➢ **सावित्री माता**:- पुष्कर (अजमेर)। भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को विशाल मेला लगता है।
➢ **उंठाला माता**:- वल्लभनगर (उदयपुर)
➢ **मातर माता**:- सिरोही
➢ **हिचकी माता**:- सनवाड़, जयपुर

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. सुगन चिड़ी को किस लोक माता का स्वरूप माना जाता जाता है ?
A. शीतला माता
B. नारायणी माता
C. स्वांगिया माता
D. नागणेची माता **(C)**

2. बीकानेर के राठौड़ों की इष्टदेवी कौन थी ?
A. नागणेची माता
B. नारायणी माता
C. करणी माता
D. तेमडाराय माता **(C)**

3. करणी माता के वंशज कहलाते हैं ?
A. काबा
B. देपावत
C. चिरजा
D. मंढ **(A)**

4. जीण माता के मंदिर का निर्माण किसने करवाया था ?
A. हमीर देव
B. राजा हट्टड़
C. प्रथ्वीराज चौहान तृतीय
D. महाराणा कुंभा **(B)**

5. कछवाहा वंश के इष्ट देवी/आराध्य देवी कौन है ?
A. शीला माता
B. जमुवाय माता
C. सकराय माता
D.सच्चियाय माता **(B)**

6. राजस्थान की एकमात्र लोक देवी कौनसी है जिसकी खंडित रूप में पूजा होती है ?
A. जमुवाय माता
B. शीला माता
C. शीतला माता
D. ब्राह्मणी माता **(C)**

7. किस लोक देवी के मंदिर के सामने बोहरा भगत की छतरी स्थित है ?
A. शीतला माता
B. नारायणी माता
C. कैला देवी
D. शीला देवी **(C)**

8. किस लोक देवी के मंदिर में मुगल बादशाह सवा मन तेल पहुंचाते थे ?
A. जीण माता
B. करणी माता
C. शीला माता
D. शीतला माता **(A)**

9. राजसमंद झील में किस लोकदेवी का स्थान (मंदिर) स्थित है?
A. घेवर माता B. जीण माता
C. तनोट माता D. आवड़ माता **(A)**

10.बाणमाता कौन से राजपूत वंश की कुल देवी है ?
A.राठौड़ वंश
B.सिसोदिया वंश
C.चौहान वंश
D. गुहिल वंश **(D)**

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

VDO Pre. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए WhatsApp करें

https://wa.link/x3seet

नोट्स Online order करें

https://bit.ly/eo-ro-notes